

प्रेस विज्ञप्ति

## जामिया के विदेशी भाषा विभाग ने अनुवाद, भाषा और सांस्कृतिक मध्यस्थता पर राष्ट्रीय सेमिनार किया आयोजित

नई दिल्ली, 8 मई, 2026

विदेशी भाषा विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया (JMI) ने 30 अप्रैल, 2026 को जेएमआई के भारत-अरब सांस्कृतिक केंद्र (IACC) में 'राष्ट्रीय युवा शोधकर्ता सेमिनार 2026' का आयोजन किया। इस सेमिनार में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, पंजाब विश्वविद्यालय, एमिटी विश्वविद्यालय, SRM विश्वविद्यालय और अन्य प्रतिष्ठित संस्थानों के 48 से अधिक युवा शोधकर्ता एक साथ आए। उन्होंने अनुवाद अध्ययन, सांस्कृतिक मध्यस्थता, भाषा की राजनीति, अंतर-सांस्कृतिक संचार, साहित्य और वैश्विक सांस्कृतिक आदान-प्रदान जैसे विभिन्न विषयों पर विचार-विमर्श किया।

उद्घाटन सत्र में विदेशी भाषा विभाग के प्रमुख प्रो. मो. फैजुल्ला खान ने स्वागत भाषण दिया। अपने भाषण में, प्रो. खान ने वैश्वीकृत और डिजिटलीकृत दुनिया में अंतर-सांस्कृतिक संचार पर छात्रों के दृष्टिकोण पर जोर दिया और आने वाले घंटों में होने वाले संवादात्मक सत्र के प्रति उत्साह व्यक्त किया। इस सत्र में जेएमआई के अंग्रेजी विभाग के पूर्व प्रोफेसर, प्रो. अनीसुर रहमान ने मुख्य अतिथि के रूप में शोभा बढ़ाई। अपने उद्घाटन भाषण में, प्रो. रहमान ने कहा कि "युवा शोधकर्ताओं के साथ जुड़ने और उनसे सीखने से ज़्यादा समृद्ध कोई भी मंच नहीं है।" और साथ ही उन्होंने अंतर्विषयक अनुसंधान और बहुभाषी दृष्टिकोण के महत्व को भी रेखांकित किया।

विशिष्ट अतिथि, प्रो. किरण चौधरी ने सेमिनार के विषय की प्रासंगिकता और समयोचितता पर प्रकाश डाला। उन्होंने आज की दुनिया में सांस्कृतिक मेल-जोल की बढ़ती आवृत्ति और बहुलवाद पर चिंतन करने की तत्काल आवश्यकता का उल्लेख किया। उन्होंने विदेशी भाषा शिक्षण में "एकल-सांस्कृतिक" से "बहुलवादी" दृष्टिकोण की ओर हो रहे बदलाव पर भी चर्चा की, और समकालीन विदेशी भाषा शिक्षण-पद्धति (pedagogy) के संबंध में मूल्यवान अंतर्दृष्टि साझा की।

अपने मुख्य भाषण में, जामिया मिल्लिया इस्लामिया के विदेशी भाषा विभाग की प्रो. सोनिया सुरभि गुप्ता (सेवानिवृत्त) ने टिप्पणी की कि पहचान का एक शाब्दिक आधार होता है, और वह है—भाषा। उन्होंने भाषा और सत्ता के बीच के संबंध को विस्तार से समझाया, और "सांस्कृतिक मानवतावाद की रक्षा में" विदेशी भाषाओं की भूमिका पर जोर दिया। उन्होंने 1970 के दशक को भारत में विदेशी भाषाओं के स्वदेशीकरण के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ के रूप में भी पहचाना।

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के अंग्रेजी विभाग की प्रो. सिमी मल्होत्रा ने अध्यक्षीय टिप्पणी दी, जिसमें उन्होंने ऐसे प्रासंगिक विषय पर सेमिनार आयोजित करने के महत्व पर प्रकाश डाला और इस बात पर जोर दिया कि सांस्कृतिक समझ आज की सबसे बड़ी ज़रूरत है।

इस सेमिनार में कई समानांतर तकनीकी सत्र शामिल थे, जिनमें अनुवाद, भाषा और सांस्कृतिक मध्यस्थता जैसे अंतर्विषयक विषयों को शामिल किया गया था; इन सत्रों की अध्यक्षता जेएनयू की प्रो. किरण चौधरी (सेवानिवृत्त) ने की। वहीं, समाज, इतिहास और अंतर्विषयक परिप्रेक्ष्य पर आधारित सत्र की अध्यक्षता दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. रमेश कुमार ने की। जबकि जेएनयू के प्रो. अनुल के. ढींगरा (सेवानिवृत्त) ने 'सांस्कृतिक कूटनीति और अंतर्राष्ट्रीय संबंध' सत्र की अध्यक्षता की, वहीं एक अन्य समानांतर सत्र— 'साहित्य, पहचान और स्व-अन्य'—की अध्यक्षता जेएमआई की प्रो. सिमी मल्होत्रा ने की। इसके बाद के सत्र—'भाषा, शिक्षा और राजनीति'—की अध्यक्षता जेएमआई के DFL विभाग के प्रो. शाहिद तस्लीम और जेएनयू के प्रो. संजय के. भारद्वाज ने की; प्रो. भारद्वाज ने ही अंतिम सत्र—'मीडिया, लोकप्रिय संस्कृति और प्रतिनिधित्व'—की अध्यक्षता भी की। जहाँ प्रतिभागियों ने विविध वैश्विक संदर्भों से जुड़े शोध पत्र प्रस्तुत किए, जो युवा विद्वानों की जीवंत अकादमिक भागीदारी को दर्शाते थे, वहीं इस कार्यक्रम में छात्रों, शोधार्थियों और संकाय सदस्यों की भी सक्रिय भागीदारी देखने को मिली। कार्यक्रम का समापन एक समापन सत्र और प्रमाण पत्र वितरण के साथ हुआ।

इस सेमिनार का समन्वय विदेशी भाषा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. मो. फैजुल्ला खान और इसी विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. रोहित बजाज ने किया। उद्घाटन सत्र की कार्यवाही का संचालन जेएमआई के विदेशी भाषा विभाग की प्रो. नूरिन खान ने किया। डीएफएल की विषय समिति की उपाध्यक्ष सुश्री दिव्या शुक्ला ने धन्यवाद ज्ञापन के साथ सेमिनार का समापन किया।

प्रो. साइमा सईद  
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी